Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 11 | NOVEMBER 2023

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में धार्मिक सरोकार

डॉ. भुवनेश कुमार परिहार [1]

[1] **सह आचार्य (हिन्दी), राजकीय महाविद्यालय, सांभर लेक, जयपुर (राजस्थान).**

ABSTRACT:

वर्तमान में हिन्दी के विभिन्न काव्य रूपों में हिन्दी ग़ज़ल अत्यधिक प्रभावी एवं लोकप्रिय रचना है। यह अपने युग की विडम्बनाओं, विसंगतियों को प्रकट करने का सच्चा दस्तावेज है। भारत में प्राचीन काल से ही धर्म का अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह मानव सुख का प्रतिस्थापक है। वह हमारे मन हृदय से दुषितवृतियों को नियंत्रित एवं समाप्त करके हमें आदर्श के उच्च धरातल पर ले जाता है। समाज में जीवन मूल्यों को स्थापित करने के लिए धर्म की सदैव आवश्यकता होती है। कालान्तर में धर्म में केवल विशिष्ट लोगों का हक, ईश्वर के विभिन्न रूप, परम्परा, पाखण्ड एवं आडम्बर की वजह से धर्म का उपयोग शोषण, अन्याय, अत्याचार, अनाचार के लिए होने लगा। धर्म के आधार पर ही भारत देश का विभाजन भी हुआ। धार्मिक झगड़ों में मानवीय मूल्य धराशायी हो गए। हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में धार्मिक विसंगतियों, विकृतियों, अलगाववाद, घातक परम्पराओं के यथार्थ चित्रण के साथ- साथ समाज में मानवीय जीवन मूल्यों, मानवता, विश्वबंधुत्व की भावना को अपनाने की प्रेरणा दी है।

KEYWORDS:

परम्परा, पाखण्ड शोषण, अन्याय, अत्याचार, अनाचार, अंधश्रद्धा, अंधविश्वास, सांप्रदायिकता, दंगे-फसाद, आपसी प्रेम, स्नेह भाव, दंगे-आंतक, मंदिर-मस्जिद।

प्रस्तावना :

हिन्दी ग़ज़लकारों ने धार्मिक विसंगतियों, विडम्बनाओं एवं विकृतियों का अपनी ग़ज़लों में सटीक चित्रण किया है। भारत के महान संत कबीर, दादू, रैदास, नानक ने इस सन्दर्भ में अपने विचार काफि समय पूर्व की पेश कर चुके है। उन्ही की परम्परा को हिन्दी ग़ज़लकारों ने आगे बढाया। साठ के दशक से ही ग़ज़ल सम्राट दुष्यन्त ने धर्म की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं का खुला चित्रण किया। इन्होंने सर्वप्रथम अंधश्रद्धा एवं अंधविश्वास का विरोध किया क्योकि इनसे निम्नवर्ग की गरीब जनता ज्यादा पीड़ित है। इन्होंने बताया कि घुटनों पर हाथ रखकर नमाज पढ़ने वाले नमाजी के मन में सारी दुनियादारी चल रही है तो ऐसी आस्था का क्या मतलब है –

"मरघट में भीड़ है या मजारों पे भीड़ है,
अब गुल खिला रहा है तुम्हारा निजाम और
घुटनों पे रख के हाथ खड़े थे नमाज में
आ–जा रहे थे लोग ज़ेहन में तमाम और।"[1]

हिन्दी ग़ज़लकारों ने मूर्ति पूजा का भी विरोध किया है। ग़ज़लकार बल्ली सिंह 'चीमा' ने बताया कि ईश्वर या अल्लाह किसी मूर्ति या पत्थर के बजाय अच्छे व्यक्तियों के हृदय में निवास करते है –

"मस्जिदे, मन्दिर तो अच्छे आदमी के दिल में है,
मत कहो कि ईंट पत्थर में खुदा मौजूद है।"[2]

इन्होंने ईश्वर के अस्तित्व एवं धर्मगुरूओं की भूमिका पर भी एक बच्चे के माध्यम से सवाल किया है। वे कहते है कि इन धर्म के गुरूओं का नैतिक पतन हो गया है। ये अपने स्वार्थ को साधने के लिए क्षण भर दंगे करवा सकते है। इनकी यह ग़ज़ल कितनी प्रासंगिक है –

"मन्दिर में या मस्जिद में या रहता गुरूद्वारा में,
मेरा बच्चा पूछ रहा था, आज खुदा के बारे में।
माया में जो गले–गले तक डुब चुके है पहले ही,
दूर रहो माया से कहते बैठ के अब गुरू द्वारे में।
प्यार के बंधन में बंधने में लग जाती है सदियां भी,
लेकिन दंगे हो जाते है आंख के एक इशारे में।[3]

आज धर्म ने सांप्रदायिकता का रूप ले लिया है जिसके कारण समाज में दंगे–फसाद हो रहे है। ग़ज़लकार राजेश रेडड़ी के अनुसार, शहर में कौमी दंगों का इतना असर है कि त्यौहार एवं दंगे का संबंध एक जैसा हो गया है। सारे शहर में भय का माहौल हो गया है। इनका यह शेर कितना सटीक है –

"ये सारे शहर में दहशत सी क्यूं है,
यकीकन कल कोई त्यौहार होगा।".[4]

ग़ज़लकार सुल्तान अहमद ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से बताया कि इन साम्प्रदायिक दंगो ने मानवता को सर्वाधिक नुकसान ही पहुंचाया है। ये दंगा करने वाले विपरित धर्म वाले को जख्मी या कत्ल कर देते है। चारो तरफ खून की नदियां बह जाती है। इंसान एसं इसानीयत लहूलुहान हो जाती है –

"पथराव इस तरफ से भी हुआ था कि आज भी
सहला रहे है ज़ख्म सभी घर लहूलुहान।"[5]

इन मानवता एवं इंसानीयत के हत्यारों के कारण ग़ज़लकार को स्वप्न भी खून से लबरेज आते है –

"सडक पर सन्नाटा हाथों में चाकू लेकर घुमें
कही न देखों नींद मे आएँ खून में डूबे सपने।[6]

ग़ज़लकार विज्ञान व्रत ने धार्मिक दंगों की विद्रुपताओं से अवगत कराते हुए मनुष्य को सावधान किया है कि वह मजहबी दंगो से दुर रहे। क्योंकि ये मनुष्य जीवन के रक्त से सिंचित होते है –

"मजहब कर्ज वसूलेगा
लेगा और लहू लेगा।"[7]

ग़ज़लकार मधुवेश ने इन दंगों का आंखो देखा हाल बयान किया है। जब दंगे भडकते है तो शहर में खलबली मच जाती है। इनकी वजह से कुछ लोगों को विस्थापित होना पडता है। चारों और भय, तनाव, कत्ले आम का माहौल हो जाता है। इसी प्रसंग में इनकी यह ग़ज़ल प्रस्तुत है –

"कौन जाने कब शहर में गोलियां चलने लगें
सोचकर कुछ लोग अपनी पोटली के साथ है।
नाम सुन दंगाइयो का, हूँ बहुत हैरान मैं
सुन रहा कुछ लोग उनमें इस गली के साथ है।"[8]

धर्म की पवित्रता एवं महानता को धर्म के गुरूओं एवं अनुयायियों ने अपने दोहरे चरित्र से विकृत कर दिया है। मनुष्य की इस प्रवृति पर व्यंग्य करते हुए ग़ज़लकार अशोक अंजुम ने गंगा स्नान की विसंगति से अवगत करवाया। वे मानते है कि अगर गंगा स्नान से पाप

धुलते है तो कलयुगी मानव गंगा नदी में नहाकर पापकर्म में ही लिप्त रहेगा। इनका यह शेर कितना सार्थक है –

"वो प्रार्थना, वो आरती, वो जाप और और .....
गंगा में धोके हमने किए पाप और और।"[9]

ग़ज़लकार नीरज ने ऐसे दोहरे चरित्रवालों को अपनी ग़ज़लों में बेनकाब किया है। इनके अनुसार, ऐसे लोग ज्ञानी, ध्यानी होने का दावा करते है लेकिन वे ईश्वर के रहस्य को नही जानते –

"वो न ज्ञानी, न वो ध्यानी, न बिरहमन, न वो शेख़
वो कोई और थे जो तेरे मकां तक पहुंचे।"[10]

इनके दोहरे चरित्र पर ग़ज़लकार एहतराम ने व्यंग्यपूर्ण ग़ज़लें लिखी है। इनके अनुसार, पुजारी, मौलवी का दिन मंदिर–मस्जिद में व्यतीत होता है तो रात की रंगीनी का पता ही नही। इनका यह शेर द्रष्टव्य है –

"रात कोठे पर बिताता है कि होटल में कोई
रोशनी में दिन की, मन्दिर का पुजारी है तो है।"[11]

ग़ज़लकार नूर मोहम्मद 'नूर' ने अपनी ग़ज़लों में व्यक्त किया है कि इन धार्मिक विद्रुपतओ की वजह से लोगों का धर्म के प्रति अविश्वास बढता जा रहा है। धर्म के गुरूओं एवं कट्टरपंथियों ने 'हिन्दुत्व खतरे में है' या 'इस्लाम खतरे में है' के विचारों के माध्यम से सांप्रदायिकता फैलाने की कोशिश करते है। लेकिन इनकी वजह से आम आदमी का जीना दूभर हो गया है –

"उधर इस्लाम खतरे में इधर है राम ख़तरे में
मगर मैं क्या करू है मेरी सुब्होशाम खतरे में।
ये क्या से क्या बना डाला है हमने मुल्क़ को अपने
कहीं हैरी कही हामिद कही हरनाम ख़तरे में।"[12]

हिन्दी ग़ज़लकारों ने धार्मिक सकीर्णता एवं असहिष्णुता के स्थान पर मनुष्य को मानवीय मूल्य अपनाने पर जोर दिया है। निजधर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने में व्यक्ति संकीर्ण एवं असहिष्णु हो जाता है एवं समाज में नफरत फैलाने लगता है जिसका ग़ज़लकारों ने तीव्र विरोध किया है। आज देश में धार्मिक संकीर्णता इतनी बढ गई है कि धर्म के नाम पर दंगे, आगजनी, आंतक, अलगाव होने लगे है।

धर्म के नाम पर लोग आपस में बंट गए है। ऐसे लोगों ने आपसी प्रेम, सद्भाव, भाई–चारा, सौहार्द आदि जीवन मूल्यों को ठूकरा दिया है। ग़ज़लकार अशोक अंगुन ने अपनी ग़ज़लों में धर्म के आधार पर मनुष्यों को बांटने वालो से प्रश्न किया है कि अपने जमीन, बगीचों को तो बांट लिया लेकिन पुष्पों की खुश्बु को कैसे बांटोगे –

"तु है हिन्दू, तू है मुस्लिम, तू है सिख, ईसाई तू
मजहब की आरी से हमने इस गुलशन को बांट लिया
बांट नही पाये हम खुश्बू दूर–दूर तक पहुंची वह
वैसे हम इस धरती के हर उपवन को बांट लिया।"[13]

इस धार्मिकता संकीर्णता ने समाज में नफरत के बीज बो दिए। इस नफरत के कारण समाज में दंगे फसाद होने लगे। ग़ज़लकार भवेश सक्सेना के अनुसार, इस संकीर्णता एवं नफरत के कारण मनुष्य विधर्मियों की धर्म पद्धति को नुकसान पहुंचा रहा है। इसी वजह से भारत में मन्दिर मस्जिद के झगड़े बढे है। इनका यह शेर उक्त प्रसंग में कितना सटीक है –

"मन्दिर हो चाहे मस्जिद पत्थर एक से है
उसे हिन्दू इसे क्यूं मुसलमान तोड़ता है।"[14]

ग़ज़लकार रसूल अहमद 'सागर' ने धर्म के आधार पर नफरत फैलाने वाले मनुष्यों से सावचेत किया है। ऐसे लोग समाज में भ्रम का जाल फैलाकर हिन्दू–मुस्लिम एकता को समाप्त करने की कोशिश करते है। यह नफरत की आग बस्तियों तक जला देती है, इससे दूरियां रखना ही उचित है –

"नफ़रतों की आग में यूँ बस्तियां रख दी गई
घास पर जलती हुई ज्यों तिलियां रख दी गई
मंदिरों से मस्जिदों तक का सफ़र कुछ भी न था
बस हमारे ही दिलों में दूरिया रख दी गई
हिन्दू–मुस्लिम ने कभी जब एकता का मन किया
धर्म के दोनों तरफ़ बारीकियाँ रख दी गई।[15]

वर्तमान युग में शहरों मे आगजनी एवं पथराव का दौर चलता ही रहता है। नफरत की आंधी कब, क्या उजाड़ेगी कोई पता नही है। ग़ज़लकार देवमणी पांडेय उम्मीद रखते है कि इस शहर में नफरत के बजाय प्यार, स्नेह के बादल बरसने चाहिए –

"कब ऐसा सोचा था मैने मौसम भी छल जाएगा
सावन–भादों की रूत होगी, घर मेरा गल जाएगा।
नफरत की पागल चिंगारी फूँक चूकी घर कितनों के
अब जो न बरसा प्यार का बादल सारा शहर जल जायेगा।"[16]

ग़ज़लकार ज्ञान प्रकाश विवेक के अनुसार, धार्मिक संकीर्णता के कारण लोग आपस मे लड़–झगड़ रहे है। इनके दिलो में नफरत का जहर समाया हुआ है। ऐसे लोग धर्मोत्सव में एक दूसरे से स्नेह मिलन करने के बजाय हथियार तैयार करते है। इनका यह शेर प्रस्तुत है –

"तेज चाकू कर लिए चमका के रख ली लाठियाँ
धार्मिक उत्सव की हो चुकी तैयारियाँ।"[17]

धार्मिक संकीर्णता एवं विकृत मानसिकता ही इन फसादों को जन्म देती है। आज अध्यात्म का स्थान भौतिकवाद एवं क्षणवाद ने ले लिया है। ग़ज़लकार अदम गोंडवी ने अपनी ग़ज़लों में समाजकंटको द्वारा मजहब की आड़ में सांप्रदायिक दंगे–फसाद करवाने का सख्त विरोध किया है। धार्मिक संकीर्णता के कारण रजनीश के स्नानागार में सभ्यता बेनकाब हो रही है। इसी प्रंसग में इनका यह शेर प्रस्तुत है –

"डाल पर मजहब की पैहम खिल रहे दंगो के फुल
सभ्यता रजनीश के हम्माम में है बेनकाब।"[18]

ये संत कबीर की तरह एकेश्वरवादी है। जब सबका स्वामी एक है, राम–रहीम एक है तो लोग धर्म के नाम पर झगडा क्यों करते है –

"सबका मालिका एक है, रटते भी है, लड़ते भी है।
सदियों से संघर्ष से, क्या दृष्टि हमनें पाई है।"[19]

इनके अनुसार, धार्मिक संकीण एवं विकृत मानसिकता से ओत–प्रोत मनुष्य हर बात में धर्म या मन्दिर–मस्जिद बीच में ले आते है। अमीर–गरीब की लडाई हो या वैचारिक मतभेद हो, लोग असली मुद्दो को भूलाकर मंदिर मस्जिद पर लड़ने लग जाते है। इनके मन का परिष्कार आवश्यक है –

"ये अमीरों से हमारी फैसलाकुन जंग थी,
फिर कहां बीच में मन्दिर व मस्जिद आ गए।[20]

वर्तमान युग में मजहब के नाम पर इंसानों को बांटा जा रहा है। चारो और धार्मिक असहिष्णुता का माहौल है। ग़ज़लकार जगदीश जोशी के अनुसार, इस मजहबी विघटन से आज के मनुष्य का स्वभाव एवं कर्म बदल गया है –

"आदमी का आचरण बदला हुआ है
आज का वातावरण बदला हुआ है।
मजहबों में आदमी को बांट करके
धर्म का अब जागरण बदला हुआ है।"[21]

ग़ज़लकार हस्तीमल 'हस्ती' ने अपनी ग़ज़लों में हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के व्यक्तियों को एक डाल पर बैठे पक्षी के समान बताया है। धार्मिक असहिष्णुता के कारण ये मानव रूपी पक्षी अलग–अलग डाल पर जरूर बैठ गए लेकिन इनका आपसी प्रेम एवं स्नेह भाव पूरी तरह से समाप्त नही हुआ है। इनके लिए यह कल की ही बात है –

"दोनों ही एक डाल के पंछी की तरह थे
ये राम वो रसुल, अभी कल की बात है।"[22]

इन्ही पक्षियों के माध्यम से ग़ज़लकार कमलेश भट्ट ने अपनी मस्जिद में उन लोगों का चित्रण किया है जो भयवश मंदिर मस्जिद नही जाते। वो डरते है कि कही उन पर नफरत फैलाने का आरोप नही लग जाये। वे तटस्थ हो जाते है–

"कोई कब इल्जाम लगा दे उन पर नफरत बोने का
इस डर से ही मंदिर–मस्जिद जाना छुटा चिड़ियों का।"[23]

ग़ज़ल सम्राट दुष्यन्त कुमार ने ऐसे माहौल में भी प्रेम एवं भाई चारे से त्यौहार मनाने का संदेश अपनी ग़ज़लों के माध्यम से दिया है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संख्या में अधिक हिन्दू है इसके बावजूद यहां शांति से रमजान मनाया जाता है। सभी धर्मो का आदर सम्मान, यही हमारी सहिष्णुता है। इनकी ग़ज़ल द्रष्टव्य है –

''इस कदर पाबन्दी–ए–मजहब कि सदके आपके
जब से आजादी मिली है मुल्क में रमजान है।''[24]

इस प्रकार हम देखते है कि समकालीन ग़ज़लकारों ने धार्मिक संकीर्णता एवं असहिष्णुता को अपने मन एवं विचारों से बाहर निकालने के संदेश के साथ इंसानियत एवं मानवता की स्थापना करने का प्रयास भी किया है। इन ग़ज़लकारों ने धर्म के प्रति संकीर्ण मानसिकता रखने वालों को दूर रहने की सलाह दी है। इन्होंने निज धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने हेतु किया गये विवाद, दंगे–आंतक, मंदिर–मस्जिद विवाद आदि सभी स्थितियों का अपनी ग़ज़लों में यथार्थ चित्रण किया है। समसामयिक हिन्दी ग़ज़ल में धार्मिक विसंगतियों से पीडित मनुष्य की संवेदनाओं, दुखों, पीड़ाओं की सशक्त एवं सार्थक अभिव्यक्ति है।

REFERENCES

1. दुष्यन्त कुमार : साये में धुप, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–34
2. बल्ली सिह 'चीमा' : हादसा क्या चीज है, समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून–248001 पृष्ठ संख्या–36
3. वही : पृष्ठ संख्या–48
4. राजेश रेडड़ी : उडान, वाणी प्रकाशन, दरियांगज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–27
5. सुल्तान अहमद : नदी की चीख, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–15
6. वही : पृष्ठ संख्या–26
7. विज्ञान व्रत : चुप की आवाज, अयन प्रकाशन, मैहरोली, दिल्ली–110016, पृष्ठ संख्या–86
8. डॉ. सरदार मुजावर : हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–38
9. वही : पृष्ठ संख्या–124
10. वही : पृष्ठ संख्या–64
11. रवीन्द्र कालिया : हिन्दी की बेहतरीन ग़ज़लें, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, लोदी रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–93
12. गौरी नाथ : हिन्दी की चुनिन्दा ग़ज़लें, अंतिका प्रकाशन, शालीमार गार्डन, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश, पृष्ठ संख्या–93
13. दीक्षित दनकौरी : ग़ज़ल दुष्यन्त के बाद (भाग–1), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–449
14. वही : पृष्ठ संख्या–479
15. कमलेश्वर : हिन्दुस्तानी ग़ज़लें, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, पृष्ठ संख्या–228
16. डॉ. सरदार मुजावर : हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–48
17. ज्ञान प्रकाश विवेक : गुफ्तगु अवाम् से है, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–71
18. अदम गोंडवी : समय से मुठभेड, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–79
19. वही : पृष्ठ संख्या–29
20. वही : पृष्ठ संख्या–31
21. दीक्षित दनकौरी : ग़ज़ल दुष्यन्त के बाद (भाग–1), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–471
22. हस्तीमल हस्ती : कुछ और तरह से भी, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–26
23. गौरीनाथ : हिन्दी की चुनिन्दा ग़ज़लें, अंतिका प्रकाशन, शालीमार गार्डन, गाजियाबाद, पृष्ठ संख्या–105
24. दुष्यन्त कुमार : साये में धूप, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–51